बच्चों को
सीख देने वाली
कहानियाँ
और घड़ी रुक गयी तथा अन्य कहानियां
प्रकाश मनु

बच्चों को सीख देने वाली कहानियाँ

कहानियाँ बच्चों को खेल-खेल में बहुत कुछ सिखाती हैं। जो काम गूढ़ बातों और उपदेशों से भरे बड़े-बड़े पोथे नहीं कर पाते, उसे नन्ही-नन्ही रोचक कहानियाँ बड़े मजे से कर दिखाती हैं। इसलिए कि कहानियाँ हजारों वर्षों से बच्चों की दोस्त रही हैं और दोस्त बनी रहेंगी। बच्चे कहानियों को पढ़ते या सुनते हुए कभी नहीं थकते। और हर बार उनकी जिज्ञासा इस एक नन्हे सवाल के साथ सामने आती है कि फिर क्या हुआ नानी? बच्चा जो सुनता है, उसे गुनता ही नहीं, कहानी से जुड़ी कल्पना के पंखों पर सवार होकर हजारों मील दूर, क्षितिज के पार चला जाना चाहता है और वहाँ जो घट रहा है, उसे अपनी आँखों से देखना और महसूस करना चाहता है।

बच्चों को सीख देने वाली इक्यावन कहानियों का यह खूबसूरत रँगारंग गुलदस्ता तैयार किया है साहित्य अकादमी से पुरस्कृत, जाने-माने साहित्यकार प्रकाश मनु ने। आशा है, बच्चे इनसे बहुत कुछ सीखेंगे और इन कहानियों के आनंद की फुहारों से भीगेंगे भी।

प्रकाश मनु

जन्म : 12 मई, 1950 को शिकोहाबाद, उत्तर प्रदेश में।

शिक्षा : अपने निराले फक्कड़ अंदाज में जिंदगी जीने वाले प्रकाश मनु शुरू में विज्ञान के प्रतिभाशाली विद्यार्थी रहे। आगरा कॉलेज, आगरा से भौतिक विज्ञान में एम.एस-सी. करने के बाद, साहित्य में दिलचस्पी की वजह से जीवन की राह ही बदल गई। पच्चीस वर्षों तक लोकप्रिय बाल पत्रिका 'नंदन' के संपादन से जुड़े रहे। अब पूरी तरह स्वतंत्र लेखन। बाल साहित्य से जुड़ी कुछ बड़ी योजनाओं पर काम कर रहे हैं।

उपन्यास : यह जो दिल्ली है, कथा सर्कस, पापा के जाने के बाद।

कहानियाँ : 21 श्रेष्ठ कहानियाँ, मिसेज मजूमदार, जिंदगीनामा एक जीनियस का, अरुंधती उदास है, तुम कहाँ हो नवीन भाई, सुकरात मेरे शहर में, अंकल को विश नहीं करोगे।

कविता : एक और प्रार्थना, छूटता हुआ घर, कविता और कविता के बीच।

बाल साहित्य : बच्चों को सीख देते अनोखे नाटक, बच्चों के हास्य नाटक, बच्चों के रंग-रंगीले नाटक, बच्चों के श्रेष्ठ सामाजिक नाटक, बच्चों की 10 हास्य कथाएँ, ज्ञान-विज्ञान की आश्चर्यजनक कहानियाँ, मातुंगा जंगल की 51 अचरजभरी कहानियाँ, परियों की 51 मनभावन कहानियाँ, तेनालीराम की चतुराई के अनोखे किस्से, चिन-चिन चूँ, नंदू भैया की पतंगें

(कहानियाँ), गोलू भागा घर से, एक था ठुनठुनिया, चीनू का चिड़ियाघर, नन्ही गोगो के कारनामे, खुक्कन दादा का बचपन (उपन्यास), हाथी का जूता, इक्यावन बाल कविताएँ (कविताएँ), बच्चों के रंग-रँगीले नाटक, बच्चों के अनोखे हास्य नाटक, मुनमुन का छुट्टी क्लब (नाटक)। हिंदी में बाल कविता का पहला व्यवस्थित इतिहास 'हिंदी बाल कविता का इतिहास' लिखकर ऐतिहासिक महत्व का काम किया। इसके अलावा संस्मरण, साक्षात्कार और आलोचना में कुछ अलग सा काम। कई महत्वपूर्ण संपादित पुस्तकें भी।

पुरस्कार : साहित्य अकादमी के पहले बाल साहित्य पुरस्कार तथा हिंदी अकादमी के 'साहित्यकार सम्मान' से सम्मानित। कविता-संग्रह 'छूटता हुआ घर' पर प्रथम गिरिजाकुमार माथुर स्मृति पुरस्कार।

पता : 545, सेक्टर-29, फरीदाबाद- 121008 (हरियाणा)
मो. 09810602327

बच्चों को सीख देने वाली कहानियाँ : और घड़ी रुक गई तथा अन्य कहानियाँ

(खेल-खेल में जीवन की सीख देने वाली रोचक कहानियाँ)

eISBN: 978-93-5261-520-9

प्रकाशक : डायमंड पॉकेट बुक्स प्रा. लि.

X-30, ओखला इंडस्ट्रियल एरिया,

फेस-II नई दिल्ली-110020

फोन 011-40712200

ईमेल : ebooks@dpb.in

वेबसाइड : www.diamondbook.in

संस्करण : 2011

BACHCHON KO SEEKH DENE WALI KAHANIYAN :

AUR GHADEE ROK GAI AUR ANYA KAHANIYAN

By : Prakash Manu

भूमिका

जीवन की सीख देने वाली अनूठी कहानियाँ

कहानियाँ बच्चों को खेल-खेल में बहुत कुछ सिखाती हैं। जो काम गूढ़ बातों और उपदेशों से भरे बड़े-बड़े पोथे नहीं कर पाते, उसे नन्ही-नन्ही रोचक कहानियाँ बड़े मजे से कर दिखाती हैं। इसलिए कि कहानियाँ हजारों वर्षों से बच्चों की दोस्त रही हैं और दोस्त बनी रहेंगी। बच्चे कहानियों को पढ़ते या सुनते हुए कभी नहीं थकते। और हर बार उनकी जिज्ञासा इस एक नन्हे सवाल के साथ सामने आती है कि फिर क्या हुआ नानी? या...फिर क्या हुआ मम्मी? बच्चा जो सुनता है, उसे गुनता ही नहीं, कहानी से जुड़ी कल्पना के पंखों पर सवार होकर हजारों मील दूर, क्षितिज के पार चला जाना चाहता है और वहाँ जो घट रहा है, उसे अपनी आँखों से देखना और महसूस करना चाहता है।

भला कहानी में इतना जादू आता कहाँ से है? इसका जवाब तो शायद यही हो सकता है कि कहानियों के साथ जुड़े हुए अद्भुत चरित्र या जिंदगी की रोचक दास्तानें ही उन्हें इतना मनोरम बनाती हैं कि बच्चे बार-बार उनकी ओर आकर्षित होते हैं। और बचपन में पढ़ी हुई कहानियों का असर पूरे जीवन भर उनके साथ रहता है। सदियों पहले पंचतंत्र के रचयिता ने एक राजा के ढीठ, निकम्मे और उद्दंड बेटों को सीख देने के लिए एक से एक अनूठी कहानियों का सहारा लिया। उन कहानियों ने सचमुच करिश्मा कर दिखाया। उनके जरिए राजपुत्रों ने अनोखी सीख ली और वे समझदार और जिम्मेदार बने। शायद यही कारण है कि इतने लंबे अरसे से भारत की इन प्राचीन कहानियों को सारी दुनिया में खासी रुचि से पढ़ा जा रहा है। हमारे देश के इन महान ग्रंथों के महत्व को सभी ने आदर के साथ स्वीकार किया है।

और यही नहीं, दुनिया के बड़े से बड़े लेखकों ने बड़ी कृतज्ञता के साथ यह माना है कि बचपन में दादी-नानी से सुनी कहानियों का उनके जीवन पर गहरा असर पड़ा। और उसी से उनके भीतर कल्पना और संवेदनशीलता का ऐसा बीज पैदा हुआ जो बढ़ते-बढ़ते वटवृक्ष हो गया। बाद में सारी दुनिया ने उन्हें महान लेखकों के रूप में सम्मान दिया। लेकिन बचपन में अनपढ़ कही जाने वाली बूढ़ी नानी या दादी ने उन्हें ये कहानियाँ न सुनाई होतीं, तो शायद उनके भीतर कल्पना का यह अंकुर फूटता ही नहीं और वे लेखक होने की बजाय कुछ और होते। और फिर लेखक या साहित्यकार ही क्यों, बचपन में पढ़ी हुई सरस और मनोरम कहानियाँ तो हम सभी को जीवन में आगे बढ़ने की सीख देती हैं। ये रोचक और सरस कहानियाँ हमें अपना काम ईमानदारी से करने, एक बेहतर और संवेदनशील इनसान होने, किसी बड़ी से बड़ी मुश्किल के

आगे न झुकने और जीवन में हमेशा सफलता की नई-नई मंजिलों की और बढ़ने की प्रेरणा देती हैं।

इसी लिहाज से बच्चों को सीख देने वाली इक्यावन कहानियों का यह खूबसूरत रंगारंग गुलदस्ता तैयार किया गया है, जिससे बच्चे बहुत कुछ सीखेंगे और इन कहानियों के आनंद की फुहारों से भीगेंगे भी। इनमें कहीं नटखट और शरारती बच्चों के अजीबोगरीब करतब और आदतें हैं, तो कहीं धन या सत्ता के गर्व में इतराने वाले अहंकारियों का चरित्र। कहीं शॉर्टकट के सहारे जल्दी से जल्दी सफलता हासिल करने के लिए नकल या फिर जादू-मंतर पर भरोसा करने वाले अंधविश्वासी हैं, तो कहीं दूसरों की सफलता से अकारण चिढ़ने वालों का नकचढ़ापन। लेकिन खुशी की बात यह है कि आगे चलकर सभी को यह समझ में आ जाता है कि जीवन में आगे बढ़ने का एक ही मूल मंत्र है, मेहनत और ईमानदारी। इसी तरह सरल और विनयी आदमी की विनम्रता के आगे अंतत: बड़े से बड़े घमंडी आदमी का सिर झुकता है।

इन नन्ही-नन्ही रोचक कहानियों में जीवन के ये बड़े-बड़े पाठ बड़े करीने से पिरो दिए गए हैं। बच्चे इन कहानियों को पढ़ेंगे तो उन्हें लगेगा कि बिना उपदेश दिए भी बड़ी से बड़ी बातें कहानियों के जरिए कही और सीखी जा सकती हैं। उम्मीद है कि नए-निराले ढंग की इन कहानियों के जरिए सीखे हुए ये पाठ बच्चों और किशोर पाठकों के साथ जीवन भर रहेंगे और उन्हें कभी आदर्श पथ से डिगने नहीं देंगे।

प्रकाश मनु

545, सेक्टर-29
फरीदाबाद (हरियाणा)
मो. 09810602327

अनुक्रमणिका

और घड़ी रुक गई

जब से मुनमुनलाल ने घड़ी बनाई, उसका तो सिर ही फिर गया है। किसी से सीधे मुँह बात तक नहीं करता।

एक छोटे से कस्बे माणिकपुर का है मुनमुनलाल। उस छोटे से कस्बे में भला घड़ियाँ किसने देखी थीं? बल्कि आसपास के गाँवों-कस्बों के लोग भी कुछ न जानते थे। खुद मुनमुनलाल एक

दफे किसी की बारात में कलकत्ता गया था, तो उसने पहलेपहल घड़ी देखी थी। देखकर हैरान रह गया था, ''अच्छा, ऐसी शै भी है इस धरती पर!'

तभी उसने निश्चय किया था कि कभी मौका मिले, तो वह भी ऐसी घड़ी बनाकर दिखा देगा।

मुनमुनलाल का तब ताले ठीक करने का काम था। औजारों की थोड़ी बहुत जानकारी थी। कुछ औजार हाथ से भी बना लेता था। ताले ठीक करते-करते उसने दिमाग लगाया और बहुत सारे पुर्जे बनाने के बाद उन्हें जोड़कर एक दिन घड़ी बना डाली।

घड़ी चल पड़ी—टिक-टिक, टिक-टिक! और मुनमुनलाल का दिल बल्लियों उछलने लगा, ''अरे वाह, मैंने तो घड़ी बना ली। वाह रे वाह, यारो, मैंने तो घड़ी बना ली!'

पूरे माणिकपुर के लोग आए और यह घड़ी देखकर गए। सब हैरान थे कि आखिर मुनमुनलाल ने घड़ी कैसे बना ली!

मुनमुनलाल ने मुसकराकर कहा, ''पिछले पूरे पाँच साल पुर्जे तैयार करने में लगाए हैं। तब बनी है यह घड़ी। कोई खेल नहीं है।''

लेकिन पाँच साल की मेहनत से बनी घड़ी पूरे पाँच दिन भी नहीं चली और बंद हो गई। घड़ी थी भी बेडौल, कलकत्ते वाली घड़ी भला कितनी सुंदर थी!

अब तो मुनमुनलाल और सारे काम छोड़कर बस घड़ी सुधारने में जुट गया। सारे-सारे दिन वह कमरे में बंद रहता और उसके एक-एक औजार को तराशता। उसकी घिर्री में तेल डालता। उसकी कमानी को और ज्यादा चुस्त-चौकस बनाने की तरकीब सोचता। वह यह भी सोचता था कि घड़ी का पेंडुलम इतना सुंदर हो और हर घंटे बाद 'टन्न' करने वाली उसकी आवाज इतनी प्यारी हो कि लोग अश-अश कर उठें!

आखिर दो-ढाई महीने की मेहनत के बाद मुनमुनलाल ने ऐसी घड़ी बना ली और अपनी दुकान में टाँग ली। घड़ी थी भी सुंदर, और 'टन्न' की आवाज तो ऐसी मधुर जैसे कोई बुलबुल बोल रही हो!

सारे माणिकपुर में फिर से हल्ला हो गया कि मुनमुनलाल ने तो भाई, घड़ी बना ली। बड़ी ही सुंदर घड़ी बना ली!

और उस दिन के बाद से मुनमुनलाल की दुकान पर बस मेला ही लगने लगा। खासकर बच्चे तो इस तरह उमड़ते कि उन्हें हटाना ही मुश्किल।

माणिकपुर के सेठ घनश्याम दास ने कहा, ''भाई मुनमुनलाल, ऐसी एक घड़ी तो तुम हमारे लिए भी बना दो।''

मुनमुनलाल ने कहा, ''बना दूँगा सेठ जी, जरूर बना दूँगा। लेकिन देख लीजिए, पूरे पचास रुपए लगेंगे।''

सेठ घनश्याम दास ने फौरन दस-दस के पाँच नोट मुनमुनलाल की हथेली पर रख दिए।

बोले, ''ठीक है, लेकिन बनाना थोड़ा जल्दी।''

मुनमुनलाल ने कोई महीने भर में उन्हें घड़ी बनाकर दे दी। इसके बाद तो मुनमुनलाल के पास फरमाइशों का ढेर लग गया। माणिकपुर के ही नहीं, आसपास के गाँव-कसबों के लोग भी आते और जिद करते, ''मुनमुनलाल, पहले हमें घड़ी बना के दो।''

मुनमुनलाल कहता, ''पहले पैसे जमा करने होंगे। जिसके पैसे पहले आएँगे, उसकी घड़ी पहले बनाकर दूँगा।''

अब तो हालत यह थी कि लोग लाइन लगाकर खड़े होते मुनमुनलाल की दुकान के आगे, घड़ी के पैसे जमा कराने के लिए। उनमें एक से एक अमीर लोग, बड़े से बड़े अफसर होते। वे आग्रह करते, ''मुनमुनलाल, हमारी घड़ी पहले बना दो।'' पर मुनमुनलाल सख्ती से कहता, ''जिसके पैसे पहले आएँगे, घड़ी उसी को पहले मिलेगी।''

सुनकर सब चुप रह जाते। सोचते, ''मुनमुनलाल बात तो सही कह रहा है।'

पर कुछ दिन बाद मुनमुनलाल इतना घमंडी हो गया कि किसी से भी सीधे मुँह बात नहीं करता था। हर किसी को फटकार देता। कहता, ''मैं कोई मामूली आदमी हूँ। मैंने घड़ी बनाई है, कोई मामूली बात है ये? कोई और बनाकर तो दिखा दे!''

अब लोग मुनमनुलाल से बात करने से कतराते। पर उसकी बनाई घड़ी इतनी सुंदर होती थी कि उसे लेने के लिए लोगों को उसकी दुकान पर जाना ही पड़ता था।

मुनमुनलाल ने अब हर चीज से अपने को काट लिया। कस्बे में किसी से भी उसकी बोलचाल नहीं थी। बस, रात-दिन कमरे में बंद रहता। हर वक्त घड़ियाँ बनाता रहता।

एक-दो लोगों ने सुझाया, ''भाई मुनमुनलाल, ऐसे कब तक चलगा? यों घड़ियाँ बनाते-बनाते तो तम पागल हो जाओगे। अपनी मदद के लिए एक-दो कारीगर रख लो।''

पर मुनमुनलाल को डर था, ''अगर कारीगर रख लूँगा, तो वे घड़ी का भेद न पा जाएँगे!' पर मन का यह भाव छिपाकर ऊपर-ऊपर से कहता, ''भाई, यह घड़ी बहुत नाजुक चीज है। कोई हँसी-ठट्ठा थोड़े ही है। उसे तो कोई मुनमुनलाल ही बना सकता है।''

सुनकर लोग चुप हो जाते। मुनमुनलाल पर उन्हें दया आती। पर मुनमुनलाल का घमंड तो जैसे सातवें आसमान पर पहुँच गया था।

मुनमुनलाल ने एक बड़ी सी घड़ी बनाकर माणिकपुर के मुख्य चौराहे पर भी लगा दी थी। खूब ऊँचाई पर, ताकि दूर-दूर से लोगों को दिखाई दे और समय का पता चलता रहे।

एक दिन एक छोटा सा बच्चा भागता-भागता आया। बोला, ''मुनमुन चाचा, तुम्हारी घड़ी तो रुक गई।''

''कौन सी घड़ी?'' मुनमुनलाल चिल्लाया।

''अरे वही, चौराहे वाली!'' बच्चे ने जवाब दिया।

मुनमुनलाल ने अपने औजारों का डिब्बा उठाया और भागा चौराहे की ओर। देखा, घड़ी रुकी हुई थी और लोग उसे देख-देखकर मुनमुनलाल पर फब्तियाँ कस रहे थे।

पर मुनमुनलाल ने किसी की बात नहीं सुनी। सीढ़ी लगाकर सीधा घड़ी तक पहुँचा और घड़ी के पुर्जे खोलकर उसे सुधारने में जुट गया।

घंटा बीता, फिर दो घंटे, चार घंटे, आठ घंटे बीत गए। पूरा दिन बीत गया, लेकिन घड़ी ठीक होने में नहीं आ रही थी। उधर लोग चिल्ला रहे थे, ''मुनमुनलाल, यह तुम्हारे घमंड का नतीजा है। इसीलिए घड़ी चल नहीं रही।''

जब रात का अँधेरा घिर आया, तो मुनमुनलाल ने चुपके से घड़ी उतारी और उसे कंधे पर टाँगकर घर ले आया।

रात भर मुनमुनलाल घड़ी को सुधारने में जुटा रहा। आखिर यह उसकी इज्जत का मामला था। मगर घड़ी थी कि सुधरने में ही नहीं आती थी। मुनमुनलाल बुरी तरह खीज गया। एक बार तो उसका मन हुआ कि हथौड़ी उठाकर घड़ी पर दे मारे और फिर सुबह होने पर एक नई घड़ी बनाकर वहाँ टाँग आए।

पर मुनमुनलाल ने खुद को किसी तरह समझाया। उसने सोचा, ''आधी रात से ज्यादा हो चुकी है। अब सो जाना ठीक है। सुबह उठकर फिर से काम में लगूँगा। तब हो सकता है, कोई नई बात सूझ जाए।''

मुनमुनलाल अभी घंटा-आध घंटा ही सोया होगा कि उसे लगा, उसकी बाँहों पर कोई चीज उछली है। झट से उसकी नींच खुल गई। एक छोटी चुहिया थी, जो किसी तरह उसकी बाँह पर चढ़ आई थी।

मुनमुनलाल ने जोरों से हाथ झटका, तो चुहिया उछली और 'धम्म' से उसी घड़ी पर जा गिरी। वह ऐन उस घड़ी की कमानी पर गिरी थी।

''ओह! सत्यानास! अब तो यह घड़ी ठीक होने से रही।'' कहते-कहते मुनमुनलाल ने फिर से हाथ को झटक दिया, तो डर के मारे चुहिया फिर से उछली और कमरे के दरवाजे के पीछे गायब हो गई।

मुनमुनलाल को उस चुहिया पर बेहद गुस्सा आया। अभी वह डंडा उठाकर उस चुहिया को मारने के लिए दौड़ना ही चाहता था...कि अचानक उसके पाँव अपनी जगह ठिठके रह गए। उसे एक सुरीली टिक-टिक-टिक की आवाज सुनाई दी।

''अरे, यह तो इसी घड़ी की आवाज है!'' मुनमुनलाल ने सोचा और तेजी से घड़ी को उठाकर सीधा किया, तो देखकर हैरान रह गया कि घड़ी मजे में चल रही थी, टिक-टिक, टिक-टिक...टिक!

मुनमुनलाल तो जैसे भौचक्का रह गया। सोचने लगा, 'अरे! जिस घड़ी को ठीक करने में मैंने अपनी पूरी जान लगा दी, वह मुझसे नहीं, एक चुहिया से ठीक हुई...एक छोटी सी चुहिया से!'

मुनमुनलाल सिर पकड़कर बैठ गया और अपने आप से पूछने लगा, ''मैं घमंड किस बात

का करता हूँ? मैं खुद को बड़ा तीसमार खाँ समझता हूँ। लेकिन यह छोटी सी चुहिया तो मुझसे भी ज्यादा होशियार निकली।''

अगले दिन सुबह-सुबह मुनमुनलाल चौराहे पर घड़ी टाँगने जा रहा था, तो उसकी चाल में अकड़ नहीं थी। उसने चौराहे पर खड़े लोगों को रात की घटना के बारे में बताया और कहा, ''आप लोग मुझे माफ कर दीजिए। मैं अपने को बहुत महान समझने लगा था। सोचता था, मैंने बहुत बड़ी खोज की, इसलिए घड़ी बनाने की कला अपने तक ही रखूँगा। किसी और को नहीं पता चलने दूँगा। पर नहीं, आज मुझे अपनी गलती पता चल गई। आज से मैं घड़ियाँ बनाऊँगा नहीं, आप लोगों को घड़ियाँ बनाना सिखाऊँगा।''

और सचमुच मुनमुनलाल ने इतने लोगों को घड़ी बनाना सिखा दिया कि माणिकपुर में घर-घर घड़ियाँ बनने लगीं। पूरी दुनिया में माणिकपुर में बनी घड़ियों की माँग होने लगी। लोग अब मुनमुनलाल की तारीफ करते नहीं थकते थे।

बेटा, तू तो शिवाजी की तरह है

शिवाजी का पूरा जीवन मुगलों से संग्राम करते बीता। उन्होंने देशभक्त लोगों को इकट्ठा करके फौज बनाई। छापामार लड़ाइयाँ लड़कर दुश्मन के किले जीते और एक शक्तिशाली साम्राज्य की स्थापना की।

शिवाजी कभी भी, कहीं भी मुगल सेना पर आक्रमण करके, उनके किलों पर अधिकार कर

लेते थे। इस कारण मुगल सेना के मन में खौफ पैदा हो गया था। शिवाजी का नाम सुनते ही मुगल सैनिक ऐसे थर-थर काँपने लगते, जैसे सामने मृत्यु आकर खड़ी हो गई हो।

पर शुरू में शिवाजी को कई बार मुँह की खानी पड़ी। एक बार वे लड़ाई के मैदान से बचकर निकल भागे। एक बुढ़िया के घर शरण ली। बुढ़िया ने यह सोचकर कि यह कोई दुखी परदेशी है, उनके लिए खिचड़ी बनाई।

शिवाजी भूखे तो थे ही। जैसे ही गरम-गरम खिचड़ी की थाली उनके आगे आई, उन्होंने जल्दी-जल्दी खाना शुरू किया। पर खिचड़ी इतनी गरम थी कि उनकी उँगलियाँ जल गईं।

बुढ़िया यह देख रही थी। वह हँसकर बोली, ''बेटा, तुम्हें तो इतना भी नहीं पता कि पहले थाली के किनारे वाली खिचड़ी खानी चाहिए। फिर बीच वाली खिचड़ी को धीरे-धीरे ठंडा करके

खाना चाहिए। लगता है बेटा, तू भी शिवाजी की तरह उतावला है। वह अपनी शक्ति तो देखता नहीं है। बड़े-बड़े किलों पर हमला करता है और हार जाता है। अब उसे कौन समझाए कि पहले छोटे-छोटे किले जीतकर अपनी ताकत बढ़ानी चाहिए, फिर बड़े किलों पर आक्रमण करना चाहिए। अगर वह मेरी सीख पर अमल करे, तो मुगल साम्राज्य की नींव हिला सकता है। उसके पास अपार बल है, रण-कौशल है, पर धीरज नहीं है...!''

सुनते ही शिवाजी की आँखें खुल गईं। खिचड़ी खाने के बाद वे उठे और हाथ धोकर बुढ़िया के पास गए। बोले, ''अम्माँ, मैं ही शिवा हूँ। आगे से तेरी बात हमेशा याद रखूँगा।''

''अरे बेटा शिवा, तू!'' बुढ़िया की आँखें अचरज के मारे फटी की फटी रह गईं।

और शिवाजी बुढ़िया के पैर छूकर रात के अँधेरे में ही बिजली की तरह निकल गए।

नन्ही सी नीना

बहुत समय पहले की बात है, सुभानपुर में एक अमीर स्त्री रहती थी। उसका नाम था चाँदतारा। चाँदतारा के पास बेशुमार दौलत थी। पर वह बिल्कुल अकेली थी। उसके कोई संतान भी नहीं थी, जिसे वह अपनी अपार दौलत सौंप जाए।

इतना धन होने के बावजूद चाँदतारा के मन में जरा भी घमंड नहीं था। दीन-दुखी और गरीब लोगों के लिए उसके मन में सच्ची हमदर्दी थी। इसीलिए बुढ़ापे में चाँदतारा अकसर यही सोचती कि, 'अपनी यह दौलत किसे सौंपूँ, जो इसका अच्छा उपयोग करे? इससे दीन-दुखियों और गरीबों की मदद करे।'

चाँदतारा ने काफी सोचा, पर उसे अपने सवाल का जवाब नहीं मिला।

एक बार की बात है। सुभानपुर में बिल्कुल बारिश नहीं हुई। अकाल के कारण लोग दाने-दाने को मोहताज थे। ऐसे में चाँदतारा ने जगह-जगह तंबू लगवाकर खाने-पीने की चीजों के पैकेट बँटवाने शुरू कर दिए।। शर्त यह थी कि बच्चे ये पैकेट लेने आएँगे, तो उन्हें सबसे पहले पैकेट दिए जाएंगे।

अब तो तंबू में बच्चों की अच्छी-खासी भीड़ रहने लगी। कुछ पैकेट बड़े थे तो कुछ छोटे। जैसे ही एक बड़े से टोकरे में भरकर पैकेट लाए जाते, बच्चे पैकेट लूटने के लिए टूट पड़ते। पर एक छोटी सी बच्ची दूर खड़ी रहती। सारे बच्चे अपने लिए बड़े-बड़े पैकेट छाँटकर ले जाते। अंत में एक छोटा सा पैकेट बचा रहता। नन्ही बच्ची नीना चुपचाप उसी को लेकर चली जाती।

चाँदतारा कई दिनों से यह देख रही थी। उसने कभी नीना को बड़े पैकेट के लिए झगड़ते नहीं देखा।

एक दिन की बात, नीना रोज की तरह अपनी टोकरी में खाने का एक छोटा पैकेट रखकर ले गई। पर घर जाते ही जैसे ही उसकी मम्मी ने पैकेट खोला, अंदर से ढेरों हीरे-मोती निकल आए।

नीना की मम्मी ने नीना से वह पैकेट वापस कर आने को कहा। बोली, ''लगता है चाँदतारा ने गलती से यह पैकेट तुम्हें दे दिया है।''

थोड़ी ही देर में नीना दौड़ी-दौड़ी चाँदतारा के पास पहुँची। बोली, ''आपसे शायद गलती हुई है। आपने मुझे गलत पैकेट दे दिया। इसके अंदर से हीरे-मोती निकले हैं।''

चाँदतारा बोली, ''नहीं-नहीं, यह तुम्हारे सब्र का फल है। मैंने तुम्हारी जैसी भली लड़की कोई और नहीं देखी। ये हीरे-मोती रख लो। कभी संकट में तुम्हारे काम आएँगे।''

लेकिन नीना बार-बार मना कर रही थी। आखिर चाँदतारा नीना के साथ उसके घर गई। उसकी मम्मी से बोली, ''ये हीरे-मोती मेरी ओर से नीना के लिए उपहार हैं। इन्हें आप रख लीजिए। लौटाइए नहीं।''

बड़ी मुश्किल से नीना की मम्मी वे हीरे-मोती रखने को तैयार हो गईं।

चाँदतारा का नीना के लिए प्यार अब और बढ़ गया था। वह अब अकसर नीना को अपने पास बुलाकर उससे ढेरों बातें करती। पढ़ाई-लिखाई में उसकी मदद करती और कहानी-कविताओं की ढेर सारी सुंदर-सुंदर किताबें लाकर उसे पढ़ने को देती। हर काम में वह नीना को सबसे आगे रखती। नीना भी चाँदतारा के सारे काम कर दिया करती थी।

चाँदतारा का मन अब शांत था। उसने मरने से पहले वसीयत में सारी दौलत नीना के नाम कर दी। लिखा, 'मेरी यह सारी दौलत प्यारी नीना के लिए है, जिसके मन में जरा भी लालच नहीं

है। नीना भले ही गरीब घर-परिवार की है, उसका दिल सोने का है। उसके मन में सभी के लिए प्यार और हमदर्दी है। वह अपनी इच्छा से गरीबों की भलाई के लिए धन खर्च करेगी, तो मेरी आत्मा को शांति मिलेगी।'

और सचमुच नीना ऐसी ही निकली। उसने प्यार और हमदर्दी से लोगों के दिलों में ऐसी जगह बना ली कि लोग उसे 'धरती की देवी' कहकर पुकारने लगे। आज भी उसकी नेकी के किस्से जगह-जगह सुनाई दे जाते हैं।

अक्ल की परदादी

जुगनीपुर गाँव का किस्सा है। उसी गाँव में रहता था बुद्धू। नाम तो उसका न जाने क्या था, पर सब उसे कहते थे, बुद्धूराम। था भी वह थोड़ा बुद्धू। 'बुद्धूराम' कहकर कोई बुलाए, तो वह चिढ़ता था। सोचता था, जैसे भी हो, मुझे अक्लमंद होना चाहिए।

कभी-कभी बुद्धू लोगों के ताने और उलटी-सीधे बातें सुनकर दुखी हो जाता, तो उसकी घरवाली सुंदरी मुस्कराकर उसे दिलासा देती। कहती, ''पर यह तो सोचो कि तुम दिल के कितने अच्छे हो! किसी का बुरा तो नहीं सोचते। फिर तुम्हें परेशान होने की क्या जरूरत है?''

बुद्धू को बात समझ में आ जाती। लेकिन कुछ दिनों बाद फिर कोई ऐसी बात हो जाती कि वह परेशान हो उठता।

एक दिन बुद्धू ने दुखी होकर अपनी घरवाली सुंदरी से कहा, ''अरे सुनो तो! जरा बताओ, अक्ल कहाँ मिलती है? थोड़ी अक्ल मिल जाए, तो लोग मुझे बुद्धू कहना छोड़ देंगे।''

सुनकर सुंदरी को हँसी आ गई। बोली, ''मुझे तो पता नहीं। पर सुना है, पहाड़ पर एक बुढ़िया माई रहती है। वह बड़ी अक्लमंद है। उससे जाकर बात करो।''

अगले दिन बुद्धू सुबह-सुबह नाश्ता करके निकला। पहाड़ की चढ़ाई चढ़ने लगा। होते-होते दोपहर हो गई। ऊपर पहुँचा तो देखा, एक बुढ़िया अपने खेतों में पानी दे रही है। बुद्धू ने पूछा, ''क्या तुम्हीं अक्ल की परदादी हो? जल्दी से मुझे थोड़ी अक्ल दे दो। बताओ, मुझे कितने पैसे देने होंगे?''

सुनते ही बुढ़िया जोर से हँस पड़ी। बोली, ''ठीक है, लेकिन अक्ल का करोगे क्या?''

''करना क्या है! सब गाँव वालों पर अपने अक्लमंद होने का रोब गाँठूँगा। सब मुझे बुद्धू कहकर चिढ़ाते जो हैं।''

''अच्छा, बुद्धू कहते है? चच्च...यह तो बुरी बात है।'' बुढ़िया बोली। फिर पूछने लगी, ''अच्छा बताओ तो, तुम्हारे घर पर कौन-कौन हैं।''

''कोई नहीं, बस मेरी घरवाली है सुंदरी। वह तो बड़ी ही सुंदर, बड़ी ही अच्छी है!'' बुद्धू बोला।

बुढ़िया मुस्कराई, ''अच्छा ठीक है, तो कल उसे भी साथ लेकर आना।''

अगले दिन बुद्धू के साथ सुंदरी भी गई। बुढ़िया ने देर तक सुंदरी से बातें कीं। सुंदरी उसे भा गई। वह थी ही इतनी अक्लमंद।

कुछ देर बाद बुढ़िया बोली, ''जा बुद्धू, अब घर जा। मैंने देख लिया, तेरी घरवाली में बहुत अक्ल है। फिर तो तुझे चिंता करने की जरूरत ही नहीं है। आपस में अक्ल बाँटकर काम चलाओ। जब भी तेरे सामने कोई दुख-परेशानी आए, तो घरवाली से सलाह कर लिया कर।''

''अरे वाह, यह तो मैंने सोचा नहीं था कि मेरी घरवाली के पास अक्ल की पूरी पोटली है, पोटली!'' कहकर बुद्धू हँसा।

सुंदरी के साथ उसने बुढ़िया को प्रणाम किया। फिर उसका हाथ पकड़कर बुद्धू बड़े मजे से अपने घर की ओर चल पड़ा।

एक रुपए के लिए

एक था छोटा सा लड़का पिंटू। महा शैतान। शरारती होता तो भी कोई बात नहीं थी, पर वह तो झगड़ालू था। हालत यह थी कि उसकी लड़ाई-झगड़े की आदत के मारे सारे घर की नाक में दम था। अभी वह छोटा ही था, पर अकसर हर किसी से झगड़ पड़ता था। यहाँ तक कि सबसे कड़वा बोलता और बुरी-बुरी बातें भी कहता था। पिंटू के मम्मी-पापा ही नहीं, उसके दादा-दादी, चाचा-चाची और बड़े वाले ताऊ जी भी इस कारण पिंटू से नाराज रहते थे।

पिंटू के पापा अकसर उसे समझाया करते थे, ''पिंटू, अगर तुमने अपना व्यवहार नहीं बदला, तो तुम जीवन में कुछ नहीं बन पाओगे। जो नम्र होते हैं और सलीके से बोलते हैं, वही जीवन में

आगे बढ़ते हैं।''

पर पिंटू पापा की बातें एक कान से सुनता, दूसरे से निकाल देता। उधर पिंटू की लड़ाई-झगड़ों की रोज नई-नई शिकायतें उसके पापा के पास पहुँचती थीं।

एक दिन पिंटू के पापा को एक तरकीब सूझी। उन्होंने पिंटू को पास बुलाकर कहा, ''पिंटू, अगर तुम आज दिन भर किसी से बुरी बात नहीं कहोगे और किसी से झगड़ोगे नहीं, तो रात को मैं तुम्हें एक रुपया दूँगा।''

पिंटू मान गया।

उस दिन सचमुच सुबह से ही पिंटू बदला-बदला था। उसने सुबह से ही किसी से एक भी कड़वा शब्द नहीं बोला था। यहाँ तक कि चिंटू और नीटू ने उसे लड़ाई-झगड़े के लिए उकसाने की भी थोड़ी-बहुत कोशिश की, पर पिंटू शांत बना रहा।

रात होते ही पिंटू दौड़ा-दौड़ा पापा के पास गया। बोला, ''पापा...पापा, लाओ मेरा रुपया। आज मैंने किसी से झगड़ा नहीं किया।''

पापा ने जब जेब से एक रुपए का सिक्का निकालकर दिया तो पिंटू मारे खुशी के नाचने-कूदने लगा।

तभी उसके पापा ने गंभीर होकर कहा, ''पिंटू, मेरी एक बात सुनो। और जरा अच्छी तरह उस पर विचार करना।''

पिंटू थोड़ा अचकचा गया। बोला, ''हाँ-हाँ, पापा, बताइए!''

पापा बोले, ''देखो पिंटू, आज सिर्फ एक रुपए के लालच में तुमने मेरी बात मान ली और अच्छे बच्चे की तरह रहे। पर जब मैं तुम्हें कहता हूँ कि अच्छे बनकर तुम अपना पूरा जीवन सुधार सकते हो, तो तुम पर मेरी बात का कोई असर नहीं पड़ता। जबकि अच्छे और योग्य आदमी बनने पर सारी दुनिया तुम्हारी इज्जत करेगी। और तब अपनी योग्यता के बल पर तुम लाखों रुपए कमा भी सकते हो! क्या तुम्हें यह अच्छा नहीं लगेगा? तुम्हारा जीवन क्या एक रुपए से भी सस्ता है?''

पिंटू क्या कहता! उसकी गरदन शर्म से नीचे झुक गई थी। उसने धीरे से कहा, ''पापा, मैं समझ गया। अब आपको मुझसे कुछ कहने की जरूरत नहीं पड़ेगी।''

कहते-कहते पिंटू की आँखों में आँसू छलछला आए।

पिंटू के पापा ने उसे पास खींचा और प्यार से उसका माथा चूम लिया।